भारतीय महिला आन्दोलन

(एक इतिहास)

वीणा शिवपुरी

आज भारतीय महिला आन्दोलन अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी दुनियां भर की औरतों का हाथ थामे हुए है। कुछ समस्याएं सिर्फ़ हमारी अपनी हैं तो कुछ साझी, परन्तु औरत होने के नाते भोगी गई असमानता और अन्याय का अहसास हम सबको एक सूत्र में बांधता है।

आमतौर पर लोग महिला आन्दोलन पर पश्चिम की नकल का आरोप लगाते हैं। ये वही लोग होते हैं जो या तो इसके विषय में जानते नहीं हैं या सच्चाई को नकारने में उनका निहित स्वार्थ है। भारत में संगठित रूप से आन्दोलन का स्वरूप कुछ दशक पुराना ही है, परन्तु इसकी जड़ें दूर तक जाती हैं। महिला जागृति की शुरुआत उन्नीसवीं शताब्दी के सुधारवादी आन्दोलन तथा आज़ादी की लड़ाई से ही हो गई थी। स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ी औरतों में जितनी हिम्मत, आजादी और गतिशीलता नज़र आती थी वह शायद आज भी सभी औरतों को हासिल नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य से आज़ादी मिलने पर कुछ मुट्ठी भर औरतें ही राजनीति में आईं। बाकी सभी अपने-अपने घरों को लौट गईं। उस दौरान पैदा हुई जागरूकता किसी मज़बूत आन्दोलन में नहीं बदल सकी। फिर भी इस अनुभव का बीज पड़ चुका था। औरतों ने साबित कर दिया कि मौका मिलने पर वह किसी क्षेत्र में पीछे नहीं रहती हैं।

कुछ अन्य संघर्ष

ध्यान देने की बात है कि औरतें सिर्फ़ स्वतंत्रता आन्दोलन से ही नहीं जुड़ीं, बल्कि उन्होंने वर्ग संघर्ष में भी हिस्सा लिया। बंगाल में तेभागा आन्दोलन में जमींदार वर्ग के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी। साम्यवादी पार्टी के झण्डे तले सभाओं और प्रदर्शनों में हिस्सा लिया। कृषि औजारों के साथ "नारी वाहिनी" बनाकर रातों को गांव की सुरक्षा का काम तक किया। अहिंसक आन्दोलनों में पुलिस की लाठियां खाईं तो कहीं कहीं लाल मिर्च के सहारे पुलिस के हथियार भी छीने। यानि औरतें

भारत के हर कोने में चल रहे संघर्षों का अहम् हिस्सा रही हैं।

आजादी के बाद भी चाहे चाय बागान मज़दूरों का संघर्ष हो या 60 के दशक में नक्सलबाड़ी आन्दोलन, महाराष्ट्र का मंहगाई विरोधी आन्दोलन रहा हो या 1974 की मशहूर रेल हड़ताल, औरतें अगली पंक्ति में रही हैं। इन सबको महिला आन्दोलन का नाम नहीं दिया जा सकता, लेकिन ये सभी नारी चेतना के क़दम थे। इन सबके जरिए उनका राजनीतिक सोच परिपक्व हुआ।

एक नई हलचल

सातवें दशक में राजनैतिक चेतना के चलते महिला नेता उभरने लगीं। महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर चर्चाएं होने लगीं। कुछ लोगों ने जुड़ कर संगठित होने की कोशिश भी की। सन् 1975 में स्त्री मुक्ति संगठन (बम्बई) ने कामकाजी महिलाओं पर गोष्ठी बुलाई। 1978 में सोशलिस्ट विमैन्स ग्रुप ने कार्य शिविर आयोजित किया। 1978 के जुलाई महीने में "मैमिनिस्ट नैटवर्क" नामक पत्र का पहला अंक निकला।

उसी दौरान "मानुषी" का प्रकाशन शुरू हुआ। 1980 तक कई संगठनों का सोच काफ़ी हद तक विकसित हो चुका था। औरतों के खिलाफ़ हो रहे हिंसक अपराधों के विरूद्ध एकजुट आवाज़ें उठने लगी थीं।

कुछ घटनाएं

इस संदर्भ में चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में पुलिस थाने में चौदह वर्षीय लड़की मथुरा के साथ पुलिस कर्मियों द्वारा किया गया बलात्कार एक मील का पत्थर घटना साबित हुई। नागपुर की निचली अदालत

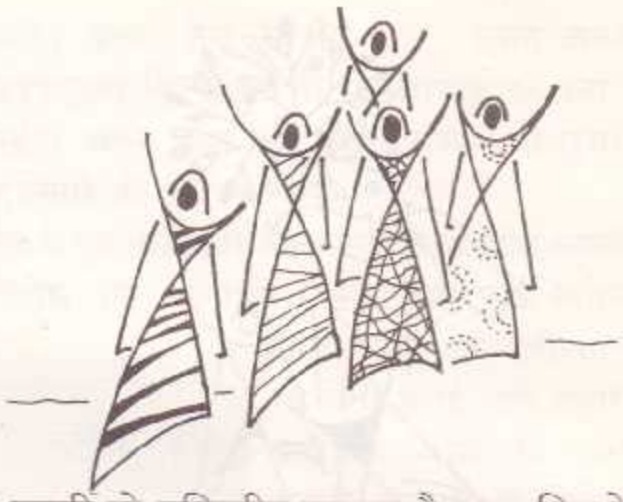

में लड़की को चरित्रहीन बताकर फ़ैसला पुलिस के हक़ में हुआ। महाराष्ट्र के उच्च न्यायालय ने फ़ैसला बदलकर सिपाहियों को साढ़े सात साल की सजा दी। देश के सर्वोच्च न्यायालय ने फिर फ़ैसला बदल दिया और यौन संबंध में मथुरा की रज़ामंदी बताई।

इन तीन अदालतों के फैसलों ने शिक्षित मध्यवर्ग की संवेदनाओं को झकझोर दिया। सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले के ख़िलाफ़ व्यापक विरोध हुआ। प्रदर्शन, बैठकें, चर्चाएं, हस्ताक्षर एकत्र किए गए।

इसी दौर में हैदराबाद की रमीज़ा बी, पंजाब की लक्ष्मी और बागपत की माया त्यागी के मामले भी रोशनी में आए। औरतों के अधिकारों का सवाल उठा। बम्बई में "फ़ोरम अगेंस्ट रेप" तथा दिल्ली में "स्त्री संघर्ष" गठित हुए। दहेज हत्याएं, पत्नियों के साथ मारपीट, शराबखोरी, यौन अत्याचार जैसे मुद्दों पर बहसें होने लगीं। अब तक जिन विषयों को दबाया छुपाया जाता था उन्हें खुले आम लाया गया। नुक्कड़ नाटकों गीतों, पोस्टरों, प्रदर्शनियों, समाचार पत्रों का सहारा लिया गया। हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में नारीवादी पत्रिकाएं निकलने लगीं।

सशक्त आन्दोलन

अब यह महसूस किया गया कि समस्याग्रस्त औरतों को कानूनी मदद देने के लिए संगठनों की जरूरत है। घर में प्रताड़ित औरतों के लिए आश्रय घरों की जरूरत है। चिकित्सा सहायता और भावनात्मक सहयोग देने वाले लोगों की जरूरत है। साथ ही ऐसे दबाव समूहों की जरूरत है जो सरकार पर दबाव डालकर कानूनों में संशोधन कराएं। इस प्रकार अनेक स्वायत्त ग़ैर सरकारी महिला संस्थाएं पैदा हुईं। अपने-अपने क्षेत्र में काम करते हुए इनका आपसी तालमेल पैदा हुआ। समय के साथ-साथ, नए-नए मुद्दे सामने आए और उन पर काम करने वाले लोग सामने आए। आज भारत में एक सशक्त महिला आन्दोलन सक्रिय है। जिसमें दूर दराज की निरक्षर औरतों से लेकर महानगर की शिक्षित आधुनिक औरतें भी शामिल हैं। सभी अपनी अपनी योग्यता के अनुसार योगदान दे रही हैं। इस आन्दोलन को मजबूत बना रही हैं। अब सवाल सिर्फ़ औरतों के मुद्दों तक सीमित नहीं है। अब सवाल मानवीय सरोकारों का है। उन पर औरतों के सोच की अहमियत का है। 50 प्रतिशत आबादी के हकों का है।

आज भारतीय महिला आन्दोलन अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी दुनियां भर की औरतों का हाथ थामे हुए है। कुछ समस्याएं सिर्फ़ हमारी अपनी हैं तो कुछ साझी परन्तु औरत होने के नाते भोगी गई असमानता और अन्याय का अहसास हम सबको एक सूत्र में बांधता है। □